Date: - 28/05 /2020.
Day: - Thursday, Time: - 10:30 to 11:20.
Class:- B.Ed. session (2019 21) 1st year. Subject: - contemporary India and Education. Paper:-2 Topic:-

प्रकृतिवाद (NATURALISM)

प्रकृतिवाद वह विचार धारा है जो प्रकृति को मूल तत्व मानती है। इस दर्शन के अनुसार प्रत्येक वस्तु प्रकृति से ही उत्पन्न होती है और उसी में विलीन हो जाती है। प्रकृतिवादी मनुष्य को निर्मल प्रकृति वाला मानते हैं और मनुष्य को अपनी प्रकृति के अनुकूल ही स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, शिक्षा मिलनी चाहिए। वे सामाजिक अथवा शासन के कठोर नियमों के विरोधी थे। प्रतिवादी समर्थकों में रूसो का नाम प्रमुख है। जिनका कहना था प्रकृति के हाथों से आने वाले प्रत्येक वस्तु बहुत अच्छी होती है, शुद्ध होती है और परंतु मनुष्य के हाथ में आकर वह दूषित हो जाती है। इसके अतिरिक्त उनके समर्थकों में अरस्तु, कान्ण्ट, हॉपस ,बेकन डार्विन, लैमार्क आदि हैं।

प्रकृतिवाद की परिभाषा :

थॉमसलैंग : ***" प्रकृतिवाद आदर्शवाद के विपरीत मन को पदार्थ के अधीन मानता है और विश्वास करता है कि अंतिम वास्तविकता भौतिक है आध्यात्मिक नहीं"***
ब्रीसी : ***" प्रकृतिवाद एक प्रणाली है जो कुछ अध्यात्मिक है उसका बहिष्कार ही उसकी प्रमुख विशेषता है"***

प्रकृतिवाद : प्रकृतिवाद NATURALISM शब्द का हिंदी रूपांतरण है।
NATURAL अर्थात प्रकृति।
Ism अर्थात वाद, सिद्धांत, प्रणाली।
इस प्रकार प्रकृति से संबंधित सिद्धांत का अध्ययन ही प्रकृतिवाद है। प्रकृतिवादी शिक्षा के क्षेत्र में प्रकृति शब्द का प्रयोग दो अर्थों में करते हैं :
१. भौतिक प्रकृति
२. बालक की प्रकृति
भौतिक प्रकृति वाह्य प्रकृति है तथा बालक की प्रकृति का अर्थ है मूल प्रवृत्तियों, आवेग, क्षमताएं। जिन्हें बालक जन्म से अपने साथ लेकर आता है।
प्रकृतिवादी दार्शनिक विचार धारा को विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से स्पष्ट किया है :
थॉमस एंड लैंग : *" आदर्शवाद के विपरीत मन को पदार्थ के अधीन मानता है और यह विश्वास करता है कि अंतिम वास्तविकता भौतिक है अध्यात्मिकनहीं"*

जेन्सवार्ड : *" प्रकृतिवाद वह सिद्धांत है जो प्रकृति को ईश्वर से पृथक मानता है। आत्मा को पदार्थ के अधीन करता है और अपरिवर्तनीय नियमों को सर्वोच्चता प्रदान करता है"*

परिभाषाओ के आधार पर प्रकृतिवाद की विशेषताएं

1. प्रकृतिवाद प्रगति को सर्वोपरि मानता है। इसके अलावा ईश्वर आत्मा आदि के सत्ता में विश्वास नहीं मानता।

2. संसार की उत्पत्ति प्रकृति से हुई है और अंत में सभी कुछ प्रकृति में ही विलीन हो जाना है।

3. यह संसार भौतिक है तथा आध्यात्मिकता का विरोध करता है।

4. आत्मा को पदार्थ के अधीन स्वीकार करता है।

5. सत्य ज्ञान का अनुभव एवं बोध प्राप्त करने में इंद्रियों का अत्यंत महत्व है।

प्रकृति के विभिन्न रूप :
१. पदार्थवादी प्रकृतिवाद
२. यंत्रवादी प्रकृतिवाद
३. जैविक प्रकृतिवाद

प्रकृतिवादी शिक्षा की विशेषताएं :
१. प्रकृति की ओर लौटो
२. पुस्तक ज्ञान का विरोध
३. प्रगतिवादी : शैशव, किशोर, बाल्य, प्रौढ़
४. बालक की प्रधानता
५. बालक की स्वतंत्रता पर बल
६. मनोवैज्ञानिक तत्वों पर बल

शिक्षा का अर्थ : प्रकृतिवादी दर्शन शिक्षा के विविध पहलुओं को नवीनता प्रदान करता है। उसके अनुसार शिक्षा वह साधन है जो मनुष्य को उसकी प्रकृति के अनुरूप विकास करने, जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाती है। प्रकृतिवादी शिक्षा को स्वाभाविक विकास की प्रक्रिया मानते हैं।

रूसो के अनुसार : ***" सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति के अंदर प्रस्फुटित होती है। यह उसकी अंतर्निहित शक्तियों की अभिव्यक्ति है।"***

प्रकृतिवाद व शिक्षा के उद्देश्य :

1. शिक्षा के उद्देश्य के निर्धारण के संबंध में विभिन्न प्रकृतिवाद विचारक परस्पर एकमत नहीं है। इस संबंध में उन्होंने अलग-अलग विचार व्यक्त किए हैं जो संक्षेप में निम्नवत है : स्पेंसर के अनुसार : ***" जीवन का उद्देश्य इस जगत में सुख पूर्वक रहना है। जिसे उसने समग्र जीवन कहा है।"***

समग्र जीवन का विश्लेषण वह जीवन की पांच प्रमुख क्रियाओं के माध्यम से करता है :
१. आत्मरक्षा
२. जीवन की मौलिक आवश्यकता की पूर्ति
३. संतुष्टि पालन
४. सामाजिक एवं राजनीतिक संबंधों का निर्वहन
५. अवकाश के समय का सदुपयोग

रूसो के अनुसार : ***" शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य को प्रकृति जीवन जीने के योग्य बनाना है। वह प्रकृति को ईश्वरीय सृष्टि मानता है। तथा बालक को ईश्वर की सर्वोच्च रचना।"***
उनका स्पष्ट मत है कि जब तक बालक अपने प्राकृतिक रूप में रहता है तब तक वह सद्गुणी, शुभ तथा श्रेष्ठ है परंतु मानव व समाज के संपर्क में आकर वह निर्गुण हो जाता है। ईश्वर सभी वस्तुओं को अच्छा बनाता है किंतु मानवीय हस्तक्षेप से वह अनिष्टकारी बन जाती है।

2. शिक्षा के उद्देश्य निर्धारण के संबंध में डार्विनवाद विचारक मत्स्य न्याय के सिद्धांत में विश्वास करते हैं जिनके अनुसार प्राणी को स्वयं को जीवित बनाए रखने के लिए वातावरण से निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। जो योग्य व शक्तिशाली होता है वही जीवित रहता है तथा निर्बल नष्ट हो जाता है। इस प्रकार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक को इस योग्य बनाना है कि वह मानव के संघर्षों का सफलतापूर्वक सामना कर सके।

इसी भाग में लैमार्कवादियों का मत है कि शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को उसके वातावरण तथा परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में सहयोग प्रदान करती है। इस दृष्टि से शिक्षा का उद्देश्य बालक को इस योग्य बनाना है कि वह अपने पर्यावरण तथा परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकें।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के शब्दों में शिक्षा का उद्देश्य है कि विकास की गति और तेज करना। इनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जातीय संस्कृति का आरक्षण, स्थानांतरण तथा वृद्धि होनी चाहिए।

प्रकृतिवाद व पाठ्यक्रम :

प्रकृतिवादी विद्यार्थी शिक्षार्थी को पाठ्यक्रम का आधार मानते हैं उनका कहना है कि पाठ्यक्रम की रूपरेखा शिक्षार्थी की रुचियों, योग्यताओं, क्षमताओं, मूलप्रवृत्तियों, स्वभाविक क्रियाओं, व्यक्तित्व विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर तैयार होनी चाहिए। जिससे वह अपनी अभिरुचियों को स्वतंत्रता पूर्वक विकसित कर सकें और विकास की विभिन्न अवस्थाओं की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए मानव जीवन को पूर्णता के साथ जी सके।

शिक्षण विधि : शिक्षण विधियों के क्षेत्र में प्रकृतिवादी विचारधारा बहुत महत्वपूर्ण है। उनका मानना है कि शिक्षण में छात्रों की रुचियों, योग्यताओं और अभिक्षमता का पूरा ध्यान रखना चाहिए। स्वतंत्र ढंग से सीखने में छात्रों की सहायता करनी चाहिए। ऐसा करने से बालक अपनी प्रकृति के अनुरूप स्वाभाविक ढंग से विकास करने में समर्थ होगा। संक्षेप में प्रकृतिवादी शिक्षण विधियों को निम्नवत ढंग से प्रकट किया जा सकता है :

१. स्वअधिगमविधि : प्रकृतिवादी इंद्रियों को ज्ञान का द्वार मानते हैं। पुस्तक की शिक्षा का विरोध करते हैं। इसलिए बालकों को ज्ञानेंद्रियों के विकास के लिए स्वअधिगम विधि का समर्थन करते थे।

२. करके सीखना : प्रकृतिवादी करके सीखना पर विशेष बल देते हैं। उनके अनुसार बालक स्वयं कुछ कर के अत्यधिक सीख सकता है।

३. खेल विधि : शैशव अवस्था खेल की अवस्था मानी जाती है। खेल-खेल में बालक बहुत कुछ समझ सकता है और ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

४. भ्रमण विधि/प्रत्यक्ष अनुभव विधि : प्रकृतिवादी विद्यालय की चारदीवारी से बाहर निकलकर विभिन्न स्थानों पर जाकर तथा प्राकृतिक घटनाओं को प्रत्यक्ष रूप से देखकर सामाजिक जीवन में प्रत्यक्ष अनुभव को प्राप्त कर शिक्षा प्राप्त करने का समर्थन करते थे।

प्रकृतिवाद और शिक्षण : प्रकृतिवाद के अनुसार शिक्षण निरीक्षण कार्य, पथ-प्रदर्शक, बाल प्रकृति ज्ञाता ,भ्रमणकर्ता, मित्रवादी तथा प्रायोगिक ज्ञान से भिन्न होता है। वह छात्रों पर किसी बात तथा किसी तथ्य को नहीं थोपता बल्कि वह अपने छात्रों को स्वच्छता विकास करने हेतु प्रेरित करता है। बालकों में विकास हेतु उपयुक्त पर्यावरण का सृजन करता है अर्थात शिक्षा का कार्य केवल बालक को विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करना है। प्रकृतिवाद विचारक प्रकृति को ही वास्तविक शिक्षक मानते हैं।

प्रकृतिवाद व शिक्षार्थी : प्रकृतिवाद के अंतर्गत पूरी शिक्षण प्रक्रिया का केंद्र बिंदु बालक अर्थात शिक्षार्थी होता है। शिक्षार्थी को प्रकृति के अनुकूल ढालने की साधना होती है। प्रकृतिवादी विचारक शिक्षार्थी को ईश्वर की श्रेष्ठ व पवित्र रचना मानते हैं किंतु सामाजिक कृतियां तथा सामाजिक कलाओं में फंसकर बालक का स्वाभाविक विकास रुक जाता है। उसकी स्वतंत्र प्रकृति का दमन कर समाज में विद्यमान बुराइयां विद्यार्थी के अंदर व्याप्त हो जाती हैं। इसी कारण शिक्षार्थी को उसके कार्य योग्यता, क्षमता और स्वाभाविक विकास को ध्यान में रखकर ही शिक्षा की व्यवस्था दी जानी चाहिए।

अनुशासन : प्रकृतिवादी विचारकों का मानना है कि गलत कार्यों के लिए प्रकृति स्वयं दंडित करेगी तथा अच्छे कार्यों के लिए पुरस्कृत करेगी किंतु बहुत से विचारकों ने प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन को स्वीकार नहीं किया है।

विद्यालय : विद्यालय के स्वरूप व व्यवस्था के संबंध में प्रकृतिवादियों का कहना है कि विद्यालय को प्रकृति के अनुकूल होना चाहिए।

प्रकृतिवाद का शिक्षा में योगदान :

१. अनुभव पर बल (Emphasis on experience)
२. बालक के मनो-विज्ञान पर बल (Emphasis on child psychology)
३. बाल केंद्रीत शिक्षा पर बल
४. शिक्षा में बालक की प्रमुखता पर बल
५. प्रकृति की ओर लौटो इस पर प्रमुख बल दिया गया है।